REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

लघुकथाओं में व्यक्त सामाजिक समस्याएँ

प्रा. डॉ. जाधव युवराज इंद्रजित
आदर्श महाविद्यालय, उमरगा, ता.उमरगा , जि. उस्मानाबाद.

भूमिका :-

मानव सामाजिक प्राणी है । वह जिस समाज में रहता है उसके कायदे कानून का पालन उसे करना पड़ता है । रुढियों, परंपराओं, नीति नियमों का पालन उसे करना पड़ता है । आधुनिक युग में देश का जितना विकास हुआ उसका असर मध्यम वर्ग पर अधिक हुआ । मध्यमवर्ग में अधिकांश नौकर पेशा लोग, शिक्षक, क्लर्क आदि आते हैं । यह वर्ग सामंतवादी युग में पूरी तरह से दबा हुआ था । एजेंट, मॅनेंजर, वकील, डॉक्टर, प्राध्यापक, कलाकार सभी प्रकार कें कर्मचारी इस वर्ग में आते हैं । उच्चवर्ग का व्यक्ति पश्चिमी देशों की जीवन प्रणाली को अपनाता है परन्तु मध्यमवर्ग जब प्रयास करता है तो अनेक प्रकार की समस्याओं से घिर जाता है। अनुकरण की चेष्टा में उसकी स्थिति हास्यास्पद हो जाती है । वह हमेशा दोहरी जिंदगी जीने लगता है । दिखाने की एक जिंदगी और असलियत की एक जिंदगी । ऐसे समय झूठीं मर्यादा और मिथ्याभिमान को पालना उसकी विवशता हो जाती है । प्रदर्शन में उसकी आर्थिक स्थिती बड़ी खोखली हो जाती है । वह दिखावा करने की केवल कोशिश करता है । सामाजिक विघटन के कारण परिवार संयुक्त से एकल बन गया है । मध्यमवर्गीय युवक अपने नाते-रिश्ते सब भूलता जा रहा है । मॉ-बाप के प्रति उसका जो उत्तरदायित्व है वह भूल गया है। पति-पत्नी में भी तीसरे की उपस्थिति के कारण विखराव आ गया है । दहेज के राक्षस ने उसे कहीं का नहीं छोड़ा । अधिकांश लघुकथाकारों ने उसी विषय पर अपनी रचनाएँ लिखी हैं । बलात्कार और वेश्यावृत्ति की समस्याएँ अधिक बढ़ गयी है । गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी की समस्याएँ दिनों-दिन बढ़ती जा रही हैं । कर्ज की समस्या और आत्महत्या की समस्या अधिक हो गयी है । दिन-ब-दिन अनेक समस्याएँ समाज में व्याप्त हो रही है । हमने लघुकथाओं में व्याप्त सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करके लघुकथाओं में व्याप्त सामाजिक समस्याओं को देखने की कोशिश की हैं।

1) परिवारिक सम्बन्धी समस्याएँ :-

'ब्लॅक हॉर्स' लघुकथा में पारिवारिक समस्या का चित्रण किया गया है । जगदीश कश्यप ने "ब्लॅक हॉर्स" में इसी की ओर संकेत किया है । "पुत्र ने अपने बॉस को पार्टी दी है । पिता उसे इंकार नही करता। पुत्र की तरक्की के लिए पिता शराब लाने चले जाते है ।"[1] 'अगदी दफा' लघुकथा में पिता-पुत्र की भूमिकाएँ बदली हुई है । पिता अपने बेटे को छाता लाने की याद दिलाता है परंतु बेटा उसे कई कारणों से टालता रहता हैं । बेटा छाता लाकर दे नहीं सकता, बुढ़े को खीझ होने लगती है । वह सोचता है ऐसी औलाद किस काम की जो अपनी जोरु के लिए तो सब कुछ ला देता है। "बाप के लिए जिसने दुनियाँ दिखाई, हर चीज के लिए यहीं जवाब, अगली तनख्वाँह पर ला दूँगा।"[2] तो इसमें पिता-पुत्रों के सम्बन्धो में आये बदलाव को दर्शाती है। 'पश्चात' लघुकथाओं में भी पिता-पुत्र के बीच दूरी का बोध होता है । 'तीस रुपये' लघुकथा में छाया वर्माजी ने मध्यवर्ग की त्रासदी की और संकेत किया है । "जो अपने पुत्र को तीस रुपये का दूध पिलाने में असमर्थ है।"[3] अभिमन्यु अनंत शबनम मे 'दूध' लघुकथा में आधुनिक युग के पुरुष और नारियों के नये सम्बधों पर प्रकाश डाला है । " 'समझौता' लघुकथा में आधुनिक युग में मॉ-बेटी के रिश्ते कितने अलग ढंग के हो गये हैं इस पर प्रकाश डाला गया है ।"[4] ऐसी अनेक लघुकथाओं में पारिवारिक संम्बधों की समस्याओं का अंकन हुआ है ।

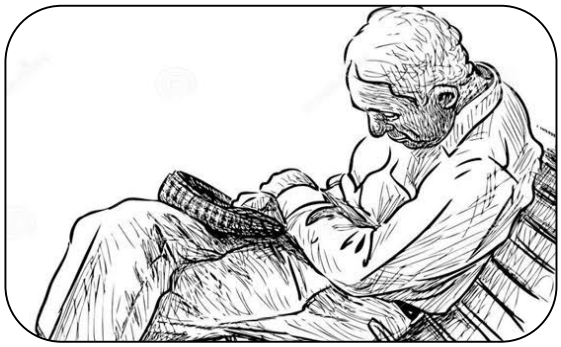

2) विवाह सम्बन्धी समस्याएँ :-

लघुकथाओं मे वैवाहिक सम्बधों का चित्रण हुआ है । "'कितने सच' मे शशि राजेश ने सप्तपदी के सात फेरे के विरुद्ध जाते पति के व्यवहार पर किया चित्रण एक करारा तमाचा है ।"[6] अमृतलाल बेगड ने

'तुर्क का भाग्य' नामक एक ऐसी लघुकथा लिखी है जिसमें पत्नी के चरित्र को समझा जा नहीं सकता ।"[7] तुर्क और उसकी पत्नी के वैवाहिक सम्बधों का चित्र स्पष्ट किया है । 'लम्बी उम्र' लघुकथा में पत्नी और पति के सम्बन्धों का चित्र स्पष्ट हुआ है । 'अनुराग' मे रामायण की कथा के आधार पर आधुनिक युग के पति-पत्नी पर टीका टिप्पणी की है । विनय विश्वास की 'एक तीर' लघुकथा में आधुनिक युग के उस पति का जिक्र किया है जो अपनी पत्नी द्वारा अपनी तरक्की करता था। अंकुश्री ने 'झूठ नहीं' लघुकथा में पति-पत्नी के बदलते हुए रिश्तों को लेकर लिखा है । सत्यप्रकाश हिदवान ने 'दाम्पत्य सुख' नामक एक ऐसी लघुकथा लिखी है जिसमें अनमोल विवाह के दुष्परिणामों की ओर संकेत किया है । शकुंतला किरण की 'अप्रत्याशित' लघुकथा दहेज पर एक अलग दृष्टि से प्रस्तुत है । 'अधिकार' लघुकथा में विवाह करने के पुर्व लड़केवाले लड़कियों को कैसे मनमाने सवाल पुछकर नीचा दिखाते हैं परन्तु 'अधिकार' नामक लघुकथा में लड़की ने भी लड़के से ऐसे सवाल पुछे जिसका उसके पास जवाब नहीं होता इसका चित्रण किया है।

3) बलात्कार संबंधी समस्याएँ :-

लघुकथाओं में बलात्कार संबंधी समस्याओं का चित्रण हुआ है । अशोक गुप्ता की 'पहरा' लघुकथा में बलात्कार की घटना का एक और पहलू पाठकों के सामने रखा हैं । इस लघुकथा में शेखर की पत्नी शांती से बलात्कार की घटना का चित्रण किया है । सत्यसुचि ने 'प्रश्नचिन्ह' लघुकथा द्वारा कई प्रश्न पाठको के सन्मुख रखे हैं। एक युवक ने लगातार एक महिने तक प्रयास करने के पश्चात एक कमरा किराया से लिया था । "एक दिन उसने देखा की मकान मालकिन कहीं बाहर गयी थी और मकान मालिक एक ग्राम्य बाला से उलझा हुआ था ।"[8] 'सुशिक्षित स्थान' अनीस अमरो हवी की लघुकथा में प्रकोप से पिड़ीत एक युवा लड़की के साथ बलात्कार की घटना का चित्रण हुआ है । बलरामजी ने बलात्कार कर मजे मे घुमनेवालों पर करारा व्यंग्य अपनी लघुकथा 'निबटान' में किया है । शमीम शर्मा ने 'बलात्कार' का प्रभाव कितने बरसों तक रहता है। इस का अंकन इस लघुकथा में किया है । "सुनयना जब बारह वर्ष की थी तब स्कूल से लौटते समय उस पर बलात्कार किया गया था उसका चित्रण है।"[9] कमल डोंगरे ने अपनी लघुकथा में ऐसे व्यक्ति पर उँगली उठायी है जो समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति होने से उस पर लगाये गये आरोपों को कोई सच नहीं मानता था । इसके कारण बर्तन माँजनेवाली की अविवाहित लड़की भी खामोश रही परंतु माँ की बार-बार पड़नेवाली मार और आसन्न प्रसव के संकट ने उसे मुँह खोलने के लिए मजबूर ही किया । इस तरह अनेक लघुकथाओं में बलात्कार पीडीत महिलाओं का चित्रण हुआ हैं ।

4) वेश्या की समस्याएँ :-

कई लघुकथाओं में वेश्या की समस्या स्पष्ट हुई हैं । अशोक गुप्ता ने 'बतहकी' नामक लघुकथा द्वारा उन तमाम वेश्याओं के त्रासद पहलुओं पर प्रकाश डाला है । अमरीक सिंह दीप ने वेश्या और पत्नी में क्या फर्क होता है ? कर्म वही होने पर भी एक का समाज में स्थान महत्वपूर्ण होता है और दुसरे का निम्न ऐसे क्यों ? इस पर प्रकाश डाला है। 'नोकरी की तलाश' लघुकथा में लक्ष्मण बिहारी माथुर ने आधुनिक युग की कॉल गर्ल को कामकाजी औरत बताया है । 'विकल्प' लघुकथा में हॉस्टेल में रहनेवाले लड़कों के कमरों की सफाई करनेवाली इमरती कहता है की मेरे हाथ में दो - चार लड़कियाँ है । लड़के उसके घर जाते है लेकिन वहाँ लड़कियाँ नहीं रहती । इमरती कहता है "सच बताऊ, मेरे हाथ में कोई लड़की नहीं है, मैने खुद तो जवानी मे भी यह काम नहीं किया पर अब तुम नही मानते तो मेरे सही...। " लड़कें वहाँ से भाग जाते है । यह एक प्रकार की छुपी हुई वेश्यावृत्ती है । श्याम बेबसने 'कपड़े' उतारते हुए लघुकथा में वेश्या का एक और पहलू उजागर किया है इसमें नायक के तन की भूख उसे रुप से बाजार तक लायी । एक दलाल ने उसे एक कमरे में पहुँचा दिया जहाँ एक जवान नारी का जिस्म उसके उपभोग के लिए सुलभ था ।

5) बेरोजगारी की समस्या :-

अशोक कुमार अंचल ने भारतीयों के भाग्यवाद पर लिखी अपनी लघुकथा में करारा व्यंग्य किया है। रोजगार तलाशते - तलाशते बेकार युवक ने जिंदगी के पच्चीस वर्ष बिताए । नोकरी लगने के बाद शादी करने का उसका इरादा था । घरवालों को लड़के की शादी का शौक था । भाग्यवादी लोगों ने कहा कि शादी करने के बाद पत्नी की किस्मत से नौकरी लगती है । बेकार युवक ने इस पर विश्वास कर शादी कर ली । शादी के तीन साल बाद भी उसे नौकरी नसीब नहीं हुई । उसने बच्चे पैदा करने की भूल नहीं की । इस पर मुहल्लेवाले और माँ-बाप ने भी कहना शुरु किया। पत्नी भी दबी भावनाओं से अपने ममत्व की भावनाएँ व्यक्त करने लगी । फिर भाग्यवादी कहने लगे, "अरे भाई बच्चे के भाग्य से भी कभी-कभी आदमी के दिन बदल जाते हैं ।"[10] फलाँ को देखो पहला बच्चा पैदा होते ही क्या शानदान नौकरी लगी । उसने भी एक बच्चा पैदा कर लिया । फिर बच्ची के भाग्य ही दुहाई दी वह भी पैदा की परंतु नौकरी का पता नहीं

। आज वह बेकार नवयुवक पाँच बच्चियौं का बाप है। क्या - क्या मुसीबतें झेलनी पड़ती है उसे ही पता होगा । इस तरह बेरोजगारों की समस्या क्या चित्रण लघुकथाओं में हुआ है ।

6) नोकरों की समस्याएँ :-

'बेबस विद्रोह' लघुकथा में मालकीन राधा देवी के हाथ से दूध का गिलास छूट जाता है और गिरते ही टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं । वह अपना क्रोध नौकरानी पर निकालती है । उसे काँच के टुकड़े उठाने के लिए और फर्श साफ करने के लिए कहती हैं । मालिक भी डाँट देता है । जेसे ही वह फर्श साफ कर रही थी कि एक किरची उसके हाथ में धँस जाता है । हाथ के दर्द ने उसके मन को बेबस विद्रोह से भर दिया । वह रोते हुए फर्श साफ करती जा रही थी । लहुलुहान हाथ को वह अपनी साड़ी के पल्लू से पौंछ भी नही पायी कि मालिक ने डाँट दिया। "छिनैल काम यहाँ करती है ध्यान कहीं और रखती है । काँच साफ किया तो हरामखोर ने लहु से सारा फर्श गंदा कर दिया । उसने उसे चाय बनाने का आर्डर दे दिया । भय और दर्द के कारण हाथें से मर्तबान गिरा और चूर-चूर हो गया । धमाके की आवाज सुनकर जैसे ही पति-पत्नी नंगे पैर रसोई में दौडे काँच की किरचियों से दोनों के पैर लहुलुहान हो गये । आगे क्या होगा यह सोचकर नौकरानी भाग जाती है । लोग - नोंकरो पर जरा भी दया दिखाते नहीं । उसका बेबस चित्रण है ।

7) कर्ज की समस्या :-

अविनाश ने मध्यवर्ग की पीड़ा को 'कर्ज' नामक लधुकथा द्वारा उठाया है । एक सज्जन बेटी के बाप को उसकी बेटी की शादी के लिए कर्ज कैसे प्राप्त किया जा सकता है यह समझाते है ।वे सलाह देते है कि उसे अपनी पत्नी के नाम शिक्षित बेरोजगारी का कर्ज लेने के लिए तीन हजार देना पड़ेगा। वे तीन हजार उस दस हजार में से काट देगा । गारंटी देने वाले को एक हजार देना पडेगा । पत्नी कोई बेरोजगार या हुनर तो जानती नहीं तो पापड, बडी आचार के व्यापारी से दोन हजार देकर रसद लेने पडेंगे । दस में से इस प्रकार छ: हजार खर्च कर देना पड़ेगा और दो चार हजार शेष रह जाऐंगे, उससे लड़की की शादी हो जायेगी । लड़की के पिता ने उन्हे सलाह देनेवाले से पुछा कि "लेकिन दस हजार कर्ज बँक का चुकायेगी किस तरह ? ओ हो ! तुमसे कर्ज चुकाने को कहा ही किसने इस देश में सब ऐसा ही चल रहा है ।"[11] बँको का लगातार डूबना ऐसे ही कारनामों का परिणाम हैं । मध्यवर्ग को कर्ज देने के बहाने कैसे-कैसे सभ्य लुटरे इस समाज में बैठे है । इस प्रकार समाज मे अनेक घटनाएँ घट रही है । इसी समस्या से समाज ग्रसा हुआ है ।

निष्कर्षत:-

जो समाज जितना अधिक गत्यात्मक एवं परिवर्तनशील होगा उसमें उतनी ही अधिक समस्याएँ विद्यमान होगी । समाज का ताना-बाना इतना जटिल है की उसकी एक इकाई में होने वाला परिवर्तन अन्य ईकाईयों को भी प्रभावित करती है । मानव समाज इन सामाजिक समस्याओं का उन्मुलन करने के लिए सदैव प्रयासरत रहा है क्योंकि सामाजिक समस्याएँ सामाजिक व्यवस्था में विघटन पैदा करती है जिससे समाज के अस्तित्व को खतरा पैदा हो जाता है । वर्तमान समय में भारतीय समाज अनेक समस्याओं से पीडीत है जिनके निराकरण के लिए समाजद्वारा प्रयास किये जा रहे हैं । भारतीय समाज की प्रमुख समस्याओं में बेरोजगारी, असमानता, अशिक्षा, गरीबी, बाल श्रमीक, दहेज प्रथा, विवाह की समस्या, आर्थिक समस्याएँ, जातिवाद, बलात्कार की समस्याएँ आती हैं । अत: लघुकथाओं में लेखकों ने इस समस्याओं को दर्शाने का प्रयास किया हैं ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. ब्लॅक हॉर्स - जगदीश कश्यप - सारिका -31 मार्च 1989, पृ. 17.
2. अगली दफा - रघुनंदन त्रिवेदी - सारिका - 31 मार्च 1989, पृ. 49.
3. तीस रुपये - छाया वर्मा - सारिका - पृ. 23.
4. शोषण मुक्ति - कुलदिप जैन - सारिका - पृ. 34-
5. पत्नी-चित्रा - सारिका - पृ. 31
6. किराने सर - शशि राजेश - सारिका - पृ. 53
7. तुर्क का भाग्य - अमृतलाल बेगड़ - सारिका - पृ. 47.
8. लालसा - विजय शर्मा - सारिका - पृ. 31.
9. बलात्कार - शमीम शर्मा - सारिका - पृ. 69.
10. बेरोजगार - अशोक कुमार आंचल- सारिका - पृ. 45.
11. कर्ज - अविनाश, सारिका - पृ. 12.